"रास्ता"

• ऐ मन मेरिआ आवा गउण संसार है अंति सचि निबेड़ा राम । आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम।

अर्थ:- हे मेरे मन ! जगत का मोह जीव के वास्ते जनम - मरन के चक्कर लाता है, आखिर सदा कायम रहने वाले परमात्मा में जुड़ने से जनम - मरण के चक्कर का खात्मा हो जाता है ।

फिरि होई न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई । सचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ।

अर्थः- जिस मनुष्य को सदा स्थिर रहने वाला प्रभु खुद ही बख्शता है उसको जगत में बार - बार फेरा नहीं डालना पड़ता । उसको बार - बार जनम - मरण के चक्कर नहीं मिलते सदा स्थिर हरि - नाम में रंगे जाते हैं, वे आत्मिक अडोलता में मस्त रहते हैं और आत्मिक अडोलता के द्वारा ही परमात्मा में लीन हो जाते हैं ।

सचा मनि भाइआ सच वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा । नानक नाम रेत से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ।1।

अर्थः- हे मेरे मन ! जिस मनुष्यों को सदा स्थिर रहने वाला प्रभु प्यारा लगने लग जाता है, जो मनुष्य सदा स्थिर प्रभु को अपने मन में बसा लेते हैं, जो मनुष्य गुरु के शब्द में रंगे जाते हैं, उनके जनम - मरण का आखिर खात्मा हो जाता है । हे नानक ! प्रभु के नाम रंग में रंगे हुए मनुष्य सदा - स्थिर प्रभु में लीन हो जाते हैं, उनको संसार समुंदर में बार - बार फेरा नहीं डालना पड़ता ।

माइआ मोह सभ बरल है दूजे भाइ खुआई राम । माता पिता सभ हेत है हेते पलचाई राम ।

अर्थः- माया का मोह पूरी तरह पागलपन है जो दुनिया को चिपका हुआ है, दुनिया इस माया के मोह में सही रास्ते से टूटती जा रही है । ये मेरी माँ है, ये मेरा पिता है, ये मेरी स्त्री है, ये मेरा पुत्र है ये भी निरा मोह है, इस मोह में ही दुनिया उलझी पड़ी है ।

हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सके कोई । जिनि सिरसटि साजी सो करि वेखै तिस जेवड अवर न कोई ।

अर्थः- पूरबले जनम में किए कर्मों के अनुसार दुनिया सन्धियों के मोह में फँसी रहती है, अपनी किसी समझदारी चतुराई से पूरबले कर्मों के संस्कारों को कोई मनुष्य मिटा नहीं सकता । जिस करतार ने ये सृष्टि

पैदा की है, वह यह माया का मोह रच के तमाशा देख रहा है कोई उसके रास्ते पर रुकावट नहीं खड़ी कर सकता, क्योंकि उसके बराबर का कोई और नहीं ।

मनमुख अंधा तप तप खपै बिन सबदै साति न आई । नानक बिन नावै सभ कोई भुला माइआ मोहि खुआई ।2।

अर्थः- अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य माया के मोह में अंधा हो के मोह में जल - जल के दुखी होता है, गुरु के शब्द के बिना उसको शाति नहीं मिल सकती । हे नानक ! परमात्मा के नाम के बिना हरेक जीव गलत रास्ते पर पड़ा हुआ है, माया के मोह के कारण सही जीवन राह से टूटा हुआ है ।

एह जग जलता देखि के भजि भए हरि सरणाई राम । अरदास करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देह वडाई राम ।

अर्थः- हे भाई ! इस संसार को विकारों में जलता देख के जो मनुष्य दौड़ के परमात्मा की शरण जा पड़ते हैं वे जलने से बच जाते हैं । मैं भी पूरे गुरु के आगे अरजोई करता हूँ मुझे विकारों में जलने से बचा ले, मुझे ये बड़प्पन बख्श ।

रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुध जेवड अवर न दाता । सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ।

अर्थः- मुझे अपनी शरण में रख परमात्मा का नाम जपने की बड़ाई बख्श । ये दात बख्शने की सामर्थ्य रखने वाला तेरे जितना और कोई नहीं । हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा की सेवा भक्ति में लगते हैं, वे बहुत भाग्यशाली हैं, वह उस परमात्मा के साथ गहरी सांझ डाल लेते हैं जो हरेक युग में एक स्वयं ही स्वयं है ।

जत सत सजम करम कमावै बिन गुर गति नही पाई ।

नानक तिस नो सबद बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ।3।

अर्थः- हे भाई ! जो कोई मनुष्य जत सत संजम आदि कर्म करता है उसका ये उद्यम व्यर्थ जाता है, गुरु की शरण पड़े बिना ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती । हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा की शरण जा पड़ता है, परमात्मा उसको गुरु का शब्द समझने की दात बख्शता है ।

जो हरि मति देई सा ऊपजै होर मति न काई राम ।
अंतरि बाहरि एक तू आपे देहि बुझाई राम ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा जो बुद्धि मनुष्य को देता है उसके अंदर वही मति प्रकट होती है । प्रभु की दी हुई मति के बिना और कोई मति मनुष्य ग्रहण नहीं कर सकता ।

आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुख हरि रस चाखिआ ।
दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ।

अर्थः- हे प्रभु ! हरेक जीव के अंदर और बाहर सिर्फ तू ही तू बसता है, तू खुद ही जीव को समझ बख्शता है । हे प्रभु ! तू खुद ही जीव को अक्ल देता है तेरी दी हुई अक्ल के बिना कोई और अकल जीव को पसंद ही नहीं आ सकती । तभी तो, हे भाई ! गुरु की शरण पड़ने वाला मनुष्य परमात्मा के नाम का स्वाद चखता है ।

घर महि निजघर पाइआ सतिगुर देई वडाई । नानक जो नामि रते सेई महल पाइनि मति परवाण सच साई ।

(3-571-572)

अर्थः- गुरु के शब्द के माध्यम से जो मनुष्य सदा स्थिर प्रभु की महिमा करता है, वह सदा-स्थिर प्रभु के दर पर सदा अडोल - चित्त टिका रहता है । हे भाई ! जिस मनुष्य को सतिगुर बड़ाई देता है वह अपने हृदय

में ही प्रभु की हजूरी हासिल कर लेता है । हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम रंग में रंगे जाते हैं वह ही परमात्मा की हजूरी प्राप्त करते हैं, सदा स्थिर प्रभु उनकी वह नाम स्मरण करने वाली बुद्धि स्वीकार करता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"